श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - १०

Aug-2021

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ६. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. बोध के बिना भी ..... श्रद्धा रखने वाले को भी सम्यक्त्व होता है । (मनसे, भावसे, ज्ञानसे)
२. सुख का मूल .....है, दुःख का मल..... है । (धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, पुण्य-पाप)
३. खरक वैद्य ने प्रभु को ..... औषधी से अच्छा किया । (संवहरणी, रोगहरणी, संरोहिणी)
४. तप करने के लिये ..... और ..... को आवश्यकता है ।
(शरीरबल-मनोबल) (मनोबल-आत्मबल) (मनोबल-वचनबल)
५. श्रावक जब ..... बनता है, तब स्वयं के स्वार्थ का त्याग करने का सत्व प्रगट करता है । (निवृत, निस्पृही, निर्मोही)
६. एक ही बार, एक आसन पर बैठ कर भोजन करे वह ..... कहलाता है । (एकासना, एकलठाणा, आयंबिल)
७. जीवन में ..... हो तो धर्म गुरु वगैरह परम उपकारी लगें । (परहितता, विनय, कृतज्ञता)
८. वीर प्रभु को संगमदेव ने सिर पर मारा हुआ कालचक्र का उपसर्ग ..... जानना ।
(उत्कृष्ट में उत्कृष्ट, मध्यम में उत्कृष्ट, उत्कृष्ट में जघन्य)
९. भोजन करते जिससे कामादि विकार हो वह ..... कहलाता है । (अभक्ष्य, विगई, अनंतकाय)
१०. करकंडु राजर्षि ..... सिद्ध कहलाते हैं । (स्वयंबुद्ध, बुद्धबोधित, प्रत्येक बुद्ध)
११. अपना जीवन एकेन्द्रिय की ..... बिना संभव नहीं । (सहायता-सहकार, साथ-सहकार, सहकार-संहार)
१२. हरिस्सह नाम का भवनपति का इन्द्र प्रभु को ..... में सुखशाता पूछने आया ।
(श्वेतांबिका नगरी, आलंभिका नगरी, श्रावत्सी नगरी)
१३. मानव जीवन में मिली सर्व शक्ति और सर्व समय को ..... बनाने का एकमात्र पुरुषार्थ करें । (प्रभुमय, भक्तिमय, धर्ममय)
१४. दही घोल कर वस्त्र से छाने उसे ..... कहते हैं । (शीखंड, सलवण, मथेवुं)
१५. ..... के प्रति भी अपनी उपेक्षा वृति ही है । (ज्ञानीओं, गुरुओं, उपकारीओं)
१६. जीव की ..... का प्रबल आलंबन सर्वज्ञ भगवंत के वचन हैं । (शुभयात्रा, सुखयात्रा, शिवयात्रा)
१७. वीर प्रभु जृंभिका गांव आये तब ..... मे आकर भक्ति से नृत्य किया । (इशानेन्द्र, चमरेन्द्र, सौधर्मेन्द्र)
१८. अन्नादि दानों का स्वाद बिना का पानी ..... कहलाता है । (लेवेणवा, ससित्थेणवा, असित्थेणवा)
१९. जीवों के उत्पन्न होने का स्थान वह योनि है, योनि ..... हैं । (अनंत, संख्य, असंख्य)
२०. जहाँ ..... वहाँ प्राप्ति । (पुरुषार्थ, पात्रता, प्रयत्न)

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. संसार कैसा है ? (सादि-सांत, अनादि अनंत, अनादि सांत)
२. दिन का पौना भाग बीत जाने के पश्चात आये उस पच्चखान को क्या कहते हैं ? (सादपोरसी, पुरिमुड्ढ, अवड्ढ)
३. कृतज्ञता के स्वामी बनने के लिये किसे दूर हटाना चाहिये ? (कृपणता, क्रूरता, कृतघ्नता)
४. देव और नारकी के जीवो की योनि कैसी होती है ? (संवृत्त, विवृत्त, जिवृत्त)
५. वीर प्रभु का पाँच मास और पच्चीस दिन का पारणा किस नगरी में हुआ ? (मिथिला, वैशाली, कौशांबी)
६. एक निगोद का कितनावा भाग मोक्ष में गया है ? (अनंतानंतवा, अनंतवां, असंख्यातवा)
७. हिंगाष्टक का किसमे समावेश होता है ? (खादिम, स्वादिम, अशन)
८. कपिल केवली कौनसे सिद्ध हुए ? (बुद्ध बोधित, प्रत्येकबुद्ध, स्वयंबुद्ध)
९. उपकारीओं पर अपकार करने वाले जीव कैसे है ? (मध्यम, अधम, अधमाधम)
१०. सुसुमारपुर में किसने उत्पात किया ? (धरणेन्द्र, चमरेन्द्र, बलीन्द्र)
११. संसार का अंत लाने का एक ही उपाय क्या है ? (भक्ति, तप, सम्यग् दर्शन)
१२. श्रावक का इक्किसवां गुण कौन सा ? (कृतज्ञ, लब्धलक्ष्य, लोकप्रिय)
१३. औषधी डाल कर पकाया हुआ घी क्या कहलाता है ? (निब्भंजन, पक्वघृत, विसंदण)
१४. सम्यग् दर्शन का स्पर्श आत्मा को होने के पश्चात कितने काल का संसार मर्यादित हो जाता है ?
(संख्यात पुद्गल परावर्तन, पुद्गल परावर्तन, अर्धपुद्गल परावर्तन)
१५. वीर प्रभु को कौन से आसन में केवलज्ञान उत्पन्न हआ । (पद्मासन, पर्यंकासन, गोदोहिक)

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) पत्तो २) भासियाइं ३) अयाणमाणेवि ४) वुढि ५) कयन्नु ६) भरहो ७) कविलाई ८) अलेवेण ९) सुहेण
१०) निरीहवित्तो ११) तरुणं १२) चुलसी १३) संखित्तो १४) दुल्लहे १५) पयत्थे १६) सयंबुद्धा

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B
१) मेघकुमार	१) धनावह
२) अवलेही	२) पासपोर्ट
३) जृंभिक	३) दानशाला
४) अन्यलिंग	४) स्थानदान
५) उदा	५) धरणेन्द्र
६) आमलगंडी	६) पयसाडी
७) नागराज	७) तापस
८) चंदनबाला	८) ऋजुवालुका
९) सम्यग् दर्शन	९) स्वादिम
१०) जगडुशाह	१०) बुढिया मां

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. सम्राट संप्रति ने कितने जिन मंदिर बनवाये ?
२. उपकार और उपकारी को नजर समक्ष रखें तो जीव के प्रकार कितने ?
३. अचित पानी के आगार कितने ?
४. वीर प्रभु का चंदनबाला के हाथों कितने उपवास का पारणा हुआ ?
५. एकेन्द्रिय जीवों की कुल योनियां कितनी हैं ?
६. "श्रावक किसे कहे" में कितने लब्धलक्ष्य श्रावकों की बात आती हैं ?
७. चौविहार उपवास के पच्चखाण के आगार कितने ?
८. अंधे कितने प्रकार के हैं ?
९. संगम देव ने वीर प्रभु का आहार कितने दिन तक अनेषणीय किया ?
१०. वीर प्रभु की सर्वतोभद्र प्रतिमा तप के कुल दिन कितने ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. एक निगोद का अनंतानंतवा भाग ही मोक्ष में गया है ।
२. जहाँ लक्ष्य मजबूत हो वहाँ सिद्धी सहज होती है ।
३. पॉपकॉर्न , पापड का समावेश स्वादिम में होता है ।
४. निगोद के सभी जीव भी कभी भी मोक्ष में जाने वाले नहीं ।
५. अरिहंत परमात्मा के प्रति जिसके हृदय मे अतूट श्रद्धा हो वहाँ निश्चित समकित होता है ।
६. चौविहार उपवास में बारिश की बूंद भी मुँह में जाये तो उससे पच्चखाण भंग होता है ।
७. गांगेय पुरुषलिंग सिद्ध थे ।
८. गन्ने का रस यद्यपि पानी में आता है, तथापि वह व्यवहार से "अशन" ही कहलाता है ।
९. बादल खारा पानी पीकर मीठा जल बरसाते हैं ।
१०. प्रभु महावीर को शुक्ल ध्यान के अंतिम दो भेद का ध्यान करते उत्तमोत्तम केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हुआ ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. वीर प्रभु के ध्यान मग्न चित्त को चलायमान करने के लिये तीन जगत में कोई भी समर्थ नहीं ।
२. यह सामान्य वैराग्य न हो फिर भी ज्ञान गर्भित वैराग्य जीव पा जाये ।
३. विगई से सना हुआ अन्न खाये तो भी पच्चखाण का भंग नहीं होता ।
४. जो बात बाह्य जीवन के लिये है, वही बात अभ्यंतर जीवन के लिये भी है ।
५. सिर्फ मांगने से वस्तु मिलती नहीं, उसके लिये कींमत चुकानी पडती है ।
६. अपनी जांच करें, आत्मनिरिक्षण करें खुद को सवाल पूछें ।
७. अतः उसने सोचा कि किसी अतिथि को देकर फिर ही मैं बाकुले वापरुं ।
८. वह तो त्याग के झूले पर झूलता है, विरती के रास्ते आगे बढता है ।
९. अगर दुःख में से मुक्त होना है, तो उसके लिये भी मार्ग है ।
१०. ज्ञान की आँख और क्रिया की पाँख (पंख) से साधना के गगन में उडता जीव अप्रमत बने ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१) सागारिआगारेणं आगार २) खरक वैद्य की सेवा ३) जीवा जिणवयण मलंहता का भावार्थ
४) मन को वश करने की सज्जाय का भावार्थ ५) सिद्ध के भेद में से कोई भी चार भेद समझाइये

यह प्रश्न पत्र वार्षिक परीक्षा का मॉडल प्रश्न पत्र है । संख्या तथा पृष्ठ नं. नहीं आयेगें ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४ सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com